"मीठे बच्चे – यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, यह बहुत अच्छा बना हुआ है, इसके पास्ट, प्रेजन्ट और फ्युचर को तुम बच्चे अच्छी तरह जानते हो"

प्रश्नः- किस कशिश के आधार पर सभी आत्मायें तुम्हारे पास खींचती हुई आयेंगी?
उत्तरः- पवित्रता और योग की कशिश के आधार पर। इसी से ही तुम्हारी वृद्धि होती जायेगी। आगे चलकर बाप को फट से जान जायेंगे। देखेंगे इतने ढेर सब वर्सा ले रहे हैं तो बहुत आयेंगे। जितनी देरी होगी उतनी तुम्हारे में कशिश होती जायेगी।

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों को यह तो मालूम है कि हम आत्मायें परमधाम से आती हैं–बुद्धि में है ना। जब सभी आत्मायें आकरके पूरी होती हैं, बाकी थोड़े रहते हैं तब बाप आते हैं। अभी तुम बच्चों को कोई को भी समझाना बहुत सहज है। दूरदेश का रहने वाला सबसे पिछाड़ी में आते हैं। बाकी थोड़े रहते हैं। अभी तक भी वृद्धि होती रहती है ना। यह भी जानते हो - बाप को कोई भी जानते नहीं हैं तो फिर रचना के आदि-मध्य-अन्त को कैसे जानेंगे। यह बेहद का ड्रामा है ना। तो ड्रामा के एक्टर्स को मालूम होना चाहिए। जैसे हद के एक्टर्स को भी मालूम होता है - फलाने-फलाने को यह पार्ट मिला हुआ है। जो चीज़ पास्ट हो जाती है उनका ही फिर छोटा ड्रामा बनाते हैं। फ्युचर का तो बना न सकें। पास्ट जो हुआ है उसे लेकर और कुछ कहानियाँ भी बनाकर ड्रामा तैयार करते हैं, वही सबको दिखाते हैं। फ्युचर को तो जानते ही नहीं। अभी तुम समझते हो बाप आया है, स्थापना हो रही है, हम वर्सा पा रहे हैं। जो जो आते रहते हैं, उनको हम रास्ता बताते हैं–देवी-देवता पद पाने। यह देवतायें इतना ऊंच कैसे बने? यह भी किसको पता नहीं है। वास्तव में आदि सनातन तो देवी-देवता धर्म ही है। अपने धर्म को भूल जाते हैं तो कह देते हैं–हमारे लिए तो सब धर्म एक ही हैं।

अब तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। बाप के डायरेक्शन से ही चित्र आदि बनाये जाते हैं। बाबा दिव्य दृष्टि से चित्र बनवाते थे। कोई तो फिर अपनी बुद्धि से भी बनाते हैं। बच्चों को यह भी समझाया है, यह जरूर लिखो पार्टधारी एक्टर्स तो हैं परन्तु क्रियेटर, डायेरक्टर आदि को कोई नहीं जानते। बाप अब नये धर्म की स्थापना कर रहे हैं। पुराने से नई दुनिया बननी है। यह भी बुद्धि में रहना चाहिए। पुरानी दुनिया में ही बाप आकर के तुमको ब्राह्मण बनाते हैं। ब्राह्मण ही फिर देवता बनेंगे। युक्ति देखो कैसी अच्छी है। भल यह है अनादि बना-बनाया ड्रामा। परन्तु बना बहुत अच्छा है। बाप कहते हैं तुमको गुह्य-गुह्य बातें नित्य सुनाता रहता हूँ। जब विनाश शुरू होगा तो तुम बच्चों को पास्ट की सारी हिस्ट्री मालूम होगी। फिर सतयुग में जायेंगे तो पास्ट की हिस्ट्री कुछ भी याद नहीं रहेगी। प्रैक्टिकल एक्ट करते रहते हो। पास्ट का किसको सुनायेंगे? यह लक्ष्मी-नारायण पास्ट को बिल्कुल जानते नहीं। तुम्हारी बुद्धि में तो पास्ट, प्रेजन्ट, फ्यूचर सब है–कैसे विनाश होगा, कैसे राजाई होगी, कैसे महल बनायेंगे? बनेंगे तो जरूर ना। स्वर्ग की सीन-सीनरियाँ ही अलग हैं। जैसे-जैसे पार्ट बजाते रहेंगे मालूम पड़ता जायेगा। इसको कहा जाता है–खूने नाहेक खेल। नाहेक नुकसान होता रहता है ना। अर्थक्वेक होती है, कितना नुकसान होता है।

बाम्ब्स फेंकते हैं, यह नाहेक है ना। कोई कुछ करता थोड़ेही है। विशाल बुद्धि जो हैं वह समझते हैं–विनाश बरोबर हुआ था। जरूर मारामारी हुई थी। ऐसा खेल भी बनाते हैं। यह तो समझ भी सकते हैं। कोई समय किसकी बुद्धि में टच होता है। तुम तो प्रैक्टिकल में हो। तुम उस राजधानी के मालिक भी बनते हो। तुम जानते हो अभी उस नई दुनिया में चलना जरूर है। ब्राह्मण जो बनते हैं, ब्रह्मा द्वारा या ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा नॉलेज लेते हैं तो वहाँ आ जाते हैं। रहते तो अपने घर-गृहस्थ में हैं ना। बहुतों को तो जान भी न सको। सेन्टर्स पर कितने आते हैं। इतने सब याद थोड़ेही रह सकते हैं। कितने ब्राह्मण हैं, वृद्धि होते-होते अनगिनत हो जायेंगे। एक्यूरेट हिसाब निकाल नहीं सकेंगे। राजा को मालूम थोड़ेही पड़ता है–एक्यूरेट हमारी प्रजा कितनी है। भल आदमशुमारी आदि निकालते हैं फिर भी फ़र्क पड़ जाता है। अब तुम भी स्टूडेन्ट, यह भी स्टूडेन्ट हैं। सब भाइयों (आत्माओं) को याद करना है–एक बाप को। छोटे बच्चों को भी सिखलाया जाता है–बाबा-बाबा कहो। यह भी तुम जानते हो आगे चलकर बाप को फट से जान जायेंगे। देखेंगे इतने ढेर सब वर्सा ले रहे हैं तो बहुत आयेंगे। जितना देरी होगी उतना तुम्हारे में कशिश होती जायेगी। पवित्र बनने से कशिश होती है, जितना योग में रहेंगे उतना कशिश होगी, औरों को भी खीचेंगे। बाप भी खींचते हैं ना। बहुत वृद्धि को पाते रहेंगे। उसके लिए युक्तियाँ भी रची जा रही हैं। गीता का भगवान कौन? कृष्ण को याद करना तो बहुत सहज है। वह तो साकार रूप है ना। निराकार बाप कहते हैं मामेकम् याद करो–इस बात पर ही सारा मदार है इसलिए बाबा ने कहा था इस बात पर सबसे लिखाते रहो। बड़ी-बड़ी लिस्ट बनायेंगे तो मनुष्यों को पता पड़ेगा।

तुम ब्राह्मण जब पक्के निश्चयबुद्धि होंगे, झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा। माया के तूफान भी पिछाड़ी तक चलेंगे। विजय पा ली फिर न पुरूषार्थ रहेगा, न माया रहेगी। याद में ही बहुत करके हारते हैं। जितना तुम योग में मजबूत रहेंगे, उतना हारेंगे नहीं। यह राजधानी स्थापन हो रही है। बच्चों को निश्चय है हमारी राजाई होगी फिर हम हीरे-जवाहर कहाँ से लायेंगे! खानियाँ सब कहाँ से आयेंगी! यह सब थे तो सही ना। इसमें मूंझने की तो बात ही नहीं। जो होना है सो प्रैक्टिकल में देखेंगे। स्वर्ग बनना तो जरूर है। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, उन्हों को निश्चय रहेगा हम जाकर भविष्य में प्रिन्स बनूँगा। हीरे-जवाहरों के महल होंगे। यह निश्चय भी सर्विसएबुल बच्चों को ही होगा जो कम पद पाने वाले होंगे, उनको तो कभी ऐसे-ऐसे ख्याल आयेंगे भी नहीं कि हम महल आदि कैसे बनायेंगे। जो बहुत सर्विस करेंगे वही महलों में जायेंगे ना। दास-दासियाँ तो तैयार मिलेंगे। सर्विसएबुल बच्चों को ही ऐसे-ऐसे ख्याल आयेंगे। बच्चे भी समझते हैं कौन-कौन अच्छी सर्विस करने वाले हैं। हम तो पढ़े हुए के आगे भरी ढोयेंगे। जैसे यह बाबा है, बाबा को ख्यालात रहती है ना। बूढ़ा और बालक समान हो गया इसलिए इनकी एक्टिविटी भी बचपन मिसल होती है। बाबा की तो एक ही एक्ट है–बच्चों को पढ़ाना, सिखलाना। विजय माला का दाना बनना है तो पुरुषार्थ भी बहुत चाहिए। बहुत मीठा बनना है। श्रीमत पर चलना पड़े तब ही ऊंच बनेंगे। यह तो समझ की बात है ना। बाप कहते हैं हम जो सुनाते हैं उस पर ज़ज़ करो। आगे चल और भी तुमको साक्षात्कार होता रहेगा। नजदीक आते रहेंगे तो याद आती रहेगी। 5 हज़ार वर्ष हुए हैं अपनी राजधानी से लौटे हैं। 84 जन्मों का चक्र लगाकर आये हैं। जैसे वास्कोडिगामा के लिए

कहते हैं–वर्ल्ड का चक्र लगाया। तुमने इस वर्ल्ड में 84 का चक्र लगाया है। वो वास्कोडिगामा एक गया ना। यह भी एक है, जो तुमको 84 जन्मों का राज़ समझाते हैं। डिनायस्टी चलती है। तो अपने अन्दर देखना है–हमारे में कोई देह-अभिमान तो नहीं है? फंक तो नहीं हो जाते हैं? कहाँ बिगड़ते तो नहीं हैं?

तुम योगबल में होंगे, शिवबाबा को याद करते रहेंगे तो तुमको कोई भी चमाट आदि मार नहीं सकेंगे। योगबल ही ढाल है। कोई कुछ कर भी नहीं सकेंगे। अगर कोई चोट खाते हैं तो जरूर देह-अभिमान है। देही-अभिमानी को चोट कोई मार न सके। भूल अपनी ही होती है। विवेक ऐसा कहता है–देही-अभिमानी को कोई कुछ भी कर नहीं सकेंगे इसलिए कोशिश करनी है देही-अभिमानी बनने की। सबको पैगाम भी देना है। भगवानुवाच, मन्मनाभव। कौन-सा भगवान? यह भी तुम बच्चों को समझाना है। बस इस एक ही बात में तुम्हारी विजय होनी है। सारी दुनिया में मनुष्यों की बुद्धि में कृष्ण भगवानुवाच है। जब तुम समझाते हो तो कहते हैं - बात तो बरोबर है। परन्तु जब तुम्हारे मुआफ़िक समझें तब कहें बाबा जो सिखलाते हैं वह ठीक है। कृष्ण थोड़ेही कहेंगे - मैं ऐसा हूँ, मेरे को कोई जान नहीं सकते। कृष्ण को तो सब जान लेवें। ऐसे भी नहीं है कि कृष्ण के तन से भगवान कहते हैं। नहीं। कृष्ण तो होता ही है सतयुग में। वहाँ कैसे भगवान आयेंगे? भगवान तो आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तो तुम बच्चे बहुतों से लिखाते जाओ। तुम्हारी ऐसी बड़ी चौपड़ी छपी हुई होनी चाहिए, उसमें सबकी लिखत हो। जब देखेंगे यह तो इतने सबने ऐसे लिखा है तो खुद भी लिखेंगे। फिर तुम्हारे पास बहुतों की लिखत हो जायेगी–गीता का भगवान कौन? ऊपर में भी लिखा हुआ हो कि ऊंच ते ऊंच बाप ही है, कृष्ण तो ऊंच ते ऊंच है नहीं। वह कह न सके कि मामेकम् याद करो। ब्रह्मा से भी ऊंच ते ऊंच भगवान् है ना। मुख्य बात ही यह है जिसमें सबका देवाला निकल जायेगा।

बाबा कोई ऐसे नहीं कहते कि यहाँ बैठना है। नहीं, सतगुरू को अपना बनाए फिर अपने घर में जाकर रहो। शुरू में तो तुम्हारी भट्ठी थी। शास्त्रों में भी भट्ठी की बात है परन्तु भट्ठी किसको कहा जाता है, यह कोई नहीं जानते हैं। भट्ठी होती है ईटों की। उनमें कोई पक्की, कोई खंजर निकलती हैं। यहाँ भी देखो सोना है नहीं, बाकी भित्तर-ठिक्कर है। पुरानी चीज़ का मान बहुत है। शिवबाबा का, देवताओं का भी मान है ना। सतयुग में तो मान की बात ही नहीं। वहाँ थोड़ेही पुरानी चीजें बैठ ढूंढते हैं। वहाँ पेट भरा हुआ रहता है। ढूंढने की दरकार नहीं रहती। तुमको खोदना करना नहीं पड़ता, द्वापर के बाद खोदना शुरू करेंगे। मकान बनाते हैं, कुछ निकल आता है तो समझते हैं नीचे कुछ है। सतयुग में तुमको कोई परवाह नहीं। वहाँ तो सोना ही सोना होता है। ईटें ही सोने की होती हैं। कल्प पहले जो हुआ है, जो नूंध है वही साक्षात्कार होता है। आत्माओं को बुलाया जाता है, वह भी ड्रामा में नूंध है। इसमें मूंझने की दरकार नहीं। सेकण्ड बाई सेकण्ड पार्ट बजता है, फिर गुम हो जाता है। यह पढ़ाई है। भक्ति मार्ग में तो अनेक चित्र हैं। तुम्हारे यह चित्र सब अर्थ सहित हैं। अर्थ बिगर कोई चित्र नहीं। जब तक तुम किसको समझाओ नहीं तब तक कोई समझ न सके। समझाने वाला समझदार नॉलेजफुल एक बाप ही है। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत। ईश्वरीय घराने के अथवा कुल के तुम हो। ईश्वर आकर घराना ही स्थापन करते

हैं। अभी तुमको राजाई कुछ नहीं है। राजधानी थी, अब नहीं है। देवी-देवताओं का धर्म भी जरूर है। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजाई है ना। गीता से ब्राह्मण कुल भी बनता है, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी कुल भी बनता है। बाकी और कोई हो न सकें। तुम बच्चे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। आगे तो समझते थे–बड़ी प्रलय होती है। पीछे दिखाते हैं–सागर में पीपल के पत्ते पर कृष्ण आते हैं। पहला नम्बर तो श्रीकृष्ण ही आते हैं ना। बाकी सागर की बात नहीं है, अभी तुम बच्चों को समझ बड़ी अच्छी आई है। खुशी भी उनको होगी जो रूहानी पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ते होंगे। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं वही पास विद् ऑनर होते हैं। अगर कोई से दिल लगी हुई होगी तो पढ़ाई के समय भी वह याद आता रहेगा। बुद्धि वहाँ चली जायेगी इसलिए पढ़ाई हमेशा ब्रह्मचर्य में होती है। यहाँ तुम बच्चों को समझाया जाता है एक बाप के सिवाए और कहाँ भी बुद्धि नहीं जानी चाहिए। परन्तु जानते हैं बहुतों को पुरानी दुनिया याद आ जाती है। फिर यहाँ बैठे भी सुनते ही नहीं। भक्ति मार्ग में भी ऐसे होते हैं। सतसंग में बैठे भी बुद्धि कहाँ-कहाँ भागती रहेगी। यह तो बहुत बड़ा जबरदस्त इम्तहान है। कोई तो जैसे बैठे हुए भी सुनते नहीं हैं। कई बच्चों को तो खुशी होती है। सामने खुशी में झूलते रहेंगे। बुद्धि बाप के साथ होगी तो फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। इसके लिए बहुत अच्छा पुरुषार्थ करना है। यहाँ तो तुमको बहुत धन मिलता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. विजय माला का दाना बनने के लिए बहुत अच्छा पुरुषार्थ करना है, बहुत मीठा बनना है, श्रीमत पर चलना है।

२. योग ही सेफ्टी के लिए ढाल है इसलिए योगबल जमा करना है। देही-अभिमानी बनने की पूरी कोशिश करनी है।

वरदान:- पेपर में घबराने के बजाए फुल स्टॉप देकर फुल पास होने वाले सफलतामूर्त भव

जब किसी भी प्रकार का पेपर आता है तो घबराओ नहीं, क्वेश्चन मार्क में नहीं आओ, यह क्यों आया? इस सोचने में टाइम वेस्ट मत करो। क्वेचन मार्क खत्म और फुल स्टॉप, तब क्लास चेंज होगा अर्थात् पेपर में पास होंगे। फुलस्टाप देने वाला फुल पास होगा क्योंकि फुलस्टॉप है बिन्दी की स्टेज। देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। बाप का सुनाया हुआ सुनो, बाप ने जो दिया है वह देखो तो फुल पास हो जायेंगे और पास होने की निशानी–सदा चढ़ती कला का अनुभव करते हुए सफलता के सितारे बन जायेंगे।

स्लोगन:-

स्वउन्नति करनी है तो क्वेश्चन, करेक्शन और कोटेशन का त्याग कर अपना कनेक्शन ठीक रखो।

"मीठे बच्चे – मुख्य दो बातें सबको समझानी हैं – एक तो बाप को याद करो, दूसरा 84 के चक्र को जानो फिर सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे".

प्रश्नः- बाप की महिमा में कौन-से शब्द आते हैं जो श्रीकृष्ण की महिमा में नहीं?
उत्तरः- वृक्षपति एक बाप है, श्रीकृष्ण को वृक्षपति नहीं कहेंगे। पिताओं का पिता वा पतियों का पति एक निराकार को कहा जाता, श्रीकृष्ण को नहीं। दोनों की महिमा अलग-अलग स्पष्ट करो।

प्रश्नः- तुम बच्चे गांव-गांव में कौन-सा ढिंढोरा पिटवा दो?
उत्तरः- गांव-गांव में ढिंढोरा पिटवा दो कि मनुष्य से देवता, नर्कवासी से स्वर्गवासी कैसे बन सकते हो, आकर समझो। स्थापना, विनाश कैसे होता है, आकर समझो।

गीतः- तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो.....

ओम् शान्ति। इस गीत के पिछाड़ी की जो लाइन आती है – तुम्हीं नईया, तुम्हीं खिवैया.....यह रांग है। जैसे आपेही पूज्य, आपेही पुजारी कहते हैं - यह भी वैसे हो जाता है। ज्ञान की चमक वाले जो होंगे वह झट गीत को बन्द कर देंगे क्योंकि बाप की इनसल्ट हो जाती है। अभी तुम बच्चों को तो नॉलेज मिली है, दूसरे मनुष्यों को यह नॉलेज होती नहीं है। तुमको भी अभी ही मिलती है। फिर कभी होती ही नहीं। गीता के भगवान की नॉलेज पुरूषोत्तम बनने की मिलती है, इतना समझते हैं। परन्तु कब मिलती है, कैसे मिलती है, यह भूल गये हैं। गीता है ही धर्म स्थापना का शास्त्र, और कोई शास्त्र धर्म स्थापन अर्थ नहीं होते हैं। शास्त्र अक्षर भी भारत में ही काम आता है। सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है ही गीता। बाकी वह सब धर्म तो हैं ही पीछे आने वाले। उनको शिरोमणी नहीं कहेंगे। बच्चे जानते हैं वृक्षपति एक ही बाप है। वह हमारा बाप है, पति भी है तो सबका पिता भी है। उनको पतियों का पति, पिताओं का पिता..... कहा जाता है। यह महिमा एक निराकार की गाई जाती है। कृष्ण की और निराकार बाप के महिमा की भेंट की जाती है। श्रीकृष्ण तो है ही नई दुनिया का प्रिन्स। वह फिर पुरानी दुनिया में संगमयुग पर राजयोग कैसे सिखलायेंगे! अब बच्चे समझते हैं हमको भगवान पढ़ा रहे हैं। तुम पढ़कर यह (देवी-देवता) बनते हो। पीछे फिर यह ज्ञान चलता नहीं। प्राय: लोप हो जाता है। बाकी आटे में लून यानी चित्र जाकर बचते हैं। वास्तव में कोई का चित्र यथार्थ तो है नहीं। पहले-पहले बाप का परिचय मिल जायेगा तो तुम कहेंगे यह तो भगवान समझाते हैं। वह तो स्वत: ही बतायेंगे। तुम प्रश्न क्या पूछेंगे! पहले बाप को तो जानो।

बाप आत्माओं को कहते हैं – मुझे याद करो। बस, दो बातें याद कर लो। बाप कहते हैं मुझे याद करो और 84 के चक्र को याद करो, बस। यह दो मुख्य बातें ही समझानी हैं। बाप कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। ब्राह्मण बच्चों को ही कहते हैं, और तो कोई समझ भी न सके। प्रदर्शनी में देखो कितनी भीड़ लग जाती है। समझते हैं, इतने मनुष्य

जाते हैं तो जरूर कुछ देखने की चीज़ है। घुस पड़ते हैं। एक-एक को बैठ समझायें तो भी मुख थक जाये। तब क्या करना चाहिए? प्रदर्शनी मास भर चलती रहे तो कह सकते हैं–आज भीड़ है, कल, परसों आना। सो भी जिसको पढ़ाई की चाहना है अथवा मनुष्य से देवता बनना चाहते हैं, उनको समझाना है। एक ही यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र अथवा बैज दिखलाना चाहिए। बाप द्वारा यह विष्णुपुरी का मालिक बन सकते हो, अभी भीड़ है सेन्टर पर आना। एड्रेस तो लिखी हुई है। बाकी ऐसे ही कह देंगे – यह स्वर्ग है, यह नर्क है, इससे मनुष्य क्या समझेंगे? टाइम वेस्ट हो जाता है। ऐसे तो पहचान भी नहीं सकते, यह बड़ा आदमी है, साहूकार है या गरीब है? आजकल ड्रेस आदि ऐसी पहनते हैं जो कोई भी समझ न सके। पहले-पहले तो बाप का परिचय देना है। बाप स्वर्ग की स्थापना करने वाला है। अब यह बनना है। एम ऑबजेक्ट खड़ी है। बाप कहते हैं ऊंच ते ऊंच मैं हूँ। मुझे याद करो, यह वशीकरण मन्त्र है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और विष्णुपुरी में आ जायेंगे – इतना तो जरूर समझाना चाहिए। 8-10 रोज़ प्रदर्शनी को रखना चाहिए। तुम गांव-गांव में ढिंढोरा पिटवा दो कि मनुष्य से देवता, नर्कवासी से स्वर्गवासी कैसे बन सकते हो, आकर समझो। स्थापना, विनाश कैसे होता है, आकर समझो। युक्तियाँ बहुत हैं।

तुम बच्चे जानते हो सतयुग और कलियुग में रात-दिन का फर्क है। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात कहा जाता है। ब्रह्मा का दिन सो विष्णु का, विष्णु का सो ब्रह्मा का। बात एक ही है। ब्रह्मा के भी 84 जन्म, विष्णु के भी 84 जन्म। सिर्फ इस लीप जन्म का फ़र्क पड़ जाता है। यह बातें बुद्धि में बिठानी होती हैं। धारणा नहीं होगी तो किसको समझा कैसे सकेंगे? यह समझाना तो बहुत सहज है। सिर्फ लक्ष्मी-नारायण के चित्र के आगे ही यह प्वाइंट्स सुनाओ। बाप द्वारा यह पद पाना है, नर्क का विनाश सामने खड़ा है। वो लोग तो अपनी मानव मत ही सुनायेंगे। यहाँ तो है ईश्वरीय मत, जो हम आत्माओं को ईश्वर से मिली है। निराकार आत्माओं को निराकार परमात्मा की मत मिलती है। बाकी सब हैं मानव मत। रात-दिन का फ़र्क है ना। सन्यासी, उदासी आदि कोई भी तो दे न सकें। ईश्वरीय मत एक ही बार मिलती है। जब ईश्वर आते हैं तो उनकी मत से हम यह बनते हैं। वह आते ही हैं देवी-देवता धर्म की स्थापना करने। यह भी प्वाइंट्स धारण करनी चाहिए, जो समय पर काम आये। मुख्य बात थोड़े में ही समझाई तो भी काफी है। एक लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर समझाना भी काफी है। यह है एम ऑबजेक्ट का चित्र, भगवान ने यह नई दुनिया रची है। भगवान ने ही पुरूषोत्तम संगमयुग पर इन्हों को पढ़ाया था। इस पुरूषोत्तम युग का किसको पता नहीं है। तो बच्चों को यह सब बातें सुनकर कितना खुश होना चाहिए। सुनकर फिर सुनाने में और ही खुशी होती है। सर्विस करने वालों को ही ब्राह्मण कहेंगे। तुम्हारे कच्छ (बगल) में सच्ची गीता है। ब्राह्मणों में भी नम्बरवार होते हैं ना। कोई ब्राह्मण तो बहुत नामीग्रामी होते हैं, बहुत कमाई करते हैं। कोई को तो खाने के लिए भी मुश्किल मिलेगा। कोई ब्राह्मण तो लखपति होते हैं। बड़ी खुशी से, नशे से कहते हैं हम ब्राह्मण कुल के हैं। सच्चे-सच्चे ब्राह्मण कुल का तो पता ही नहीं है। ब्राह्मण उत्तम माने जाते हैं, तब तो ब्राह्मणों को खिलाते हैं। देवता, क्षत्रिय वा वैश्य, शूद्र धर्म

वालों को कभी खिलायेंगे नहीं। ब्राह्मणों को ही खिलाते हैं इसलिए बाबा कहते हैं – तुम ब्राह्मणों को अच्छी रीति समझाओ। ब्राह्मणों का भी संगठन होता है, उसकी जाँच कर चले जाना चाहिए। ब्राह्मण तो प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान होने चाहिए, हम उनकी सन्तान हैं। ब्रह्मा किसका बच्चा है, वह भी समझाना चाहिए। जाँच करनी चाहिए कि कहाँ-कहाँ उन्हों के संगठन होते हैं। तुम बहुतों का कल्याण कर सकते हो। वानप्रस्थ स्त्रियों की भी सभायें होती हैं। बाबा को कोई समाचार थोड़ेही देते हैं कि हम कहाँ-कहाँ गये? सारा जंगल भरा हुआ है, तुम जहाँ जाओ शिकार कर आयेंगे, प्रजा बनाकर आयेंगे, राजा भी बना सकते हो। सर्विस तो ढेर है। शाम को 5 बजे छुट्टी मिलती है, लिस्ट में नोट कर देना चाहिए–आज यहाँ-यहाँ जाना है। बाबा युक्तियाँ तो बहुत बताते हैं। बाप बच्चों से ही बात करते हैं। यह पक्का निश्चय चाहिए कि मैं आत्मा हूँ। बाबा (परम आत्मा) हमको सुनाते हैं, धारण हमको करना है। जैसे शास्त्र अध्ययन करते हैं तो फिर संस्कार ले जाते हैं तो दूसरे जन्म में भी वह संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। कहा जाता है - संस्कार ले आये हैं। जो बहुत शास्त्र पढ़ते हैं उनको अथॉरिटी कहा जाता है। वह अपने को ऑलमाइटी नहीं समझेंगे। यह खेल है, जो बाप ही समझाते हैं, नई बात नहीं है। ड्रामा बना हुआ है, जो समझने का है। मनुष्य यह नहीं समझते कि पुरानी दुनिया है। बाप कहते हैं मैं आ गया हूँ। महाभारत लड़ाई सामने खड़ी है। मनुष्य अज्ञान अंधेरे में सोये पड़े हैं। अज्ञान भक्ति को कहा जाता है। ज्ञान का सागर तो बाप ही है। जो बहुत भक्ति करते हैं, वह भक्ति के सागर हैं। भक्त माला भी है ना। भक्त माला के भी नाम इकट्ठे करने चाहिए। भक्त माला द्वापर से कलियुग तक ही होगी। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। बहुत खुशी उनको होगी जो सारा दिन सर्विस करते रहेंगे।

बाबा ने समझाया है माला तो बहुत लम्बी होती है, हज़ारों की संख्या में। जिसको कोई कहाँ से, कोई कहाँ से खींचते हैं। कुछ तो होगा ना, जो इतनी बड़ी माला बनाई है। मुख से राम-राम कहते रहते हैं, यह भी पूछना पड़े – किसको राम-राम कह याद करते हो? तुम कहाँ भी सतसंग आदि में जाकर मिक्स हो बैठ सकते हो। हनुमान का मिसाल है ना–जहाँ सतसंग होता था, वहाँ जुत्तियों में जाकर बैठता था। तुमको भी चांस लेना चाहिए। तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। सर्विस में सफलता तब होगी जब ज्ञान की प्वाइंट्स बुद्धि में होंगी, ज्ञान में मस्त होंगे। सर्विस की अनेक युक्तियाँ हैं, रामायण, भागवत आदि की भी बहुत बातें हैं। जिस पर तुम दृष्टि दे सकते हो। सिर्फ अन्धश्रद्धा से बैठ सतसंग थोड़ेही करना है। बोलो, हम तो आपका कल्याण करना चाहते हैं। वह भक्ति बिल्कुल अलग है, यह ज्ञान अलग है। ज्ञान एक ज्ञानेश्वर बाप ही देते हैं। सर्विस तो बहुत है, सिर्फ यह बताओ कि ऊंच ते ऊंच कौन है? ऊंच ते ऊंच एक ही भगवान होता है, वर्सा भी उनसे मिलता है। बाकी तो है रचना। बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिए। तुम्हें राजाई करनी है तो प्रजा भी बनानी है। यह महामन्त्र कम थोड़ेही है–बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप ने जो वशीकरण मन्त्र दिया है, वह सबको याद दिलाना है। सर्विस की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रचनी है। भीड़ में अपना समय बरबाद नहीं करना है।

२. ज्ञान की प्वाइंट्स बुद्धि में रख ज्ञान में मस्त रहना है। हनूमान की तरह सतसंगों में जाकर बैठना है और फिर उनकी सेवा करनी है। खुशी में रहने के लिए सारा दिन सेवा करनी है।

वरदान:- अपने सर्व खजानों को अन्य आत्माओं की सेवा में लगाकर सहयोगी बनने वाले सहजयोगी भव

सहजयोगी बनने का साधन है–सदा अपने को संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा और हर कार्य द्वारा विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति सेवाधारी समझ सेवा में ही सब कुछ लगाना। जो भी ब्राह्मण जीवन में शक्तियों का, गुणों का, ज्ञान का वा श्रेष्ठ कमाई के समय का खजाना बाप द्वारा प्राप्त हुआ है वह सेवा में लगाओ अर्थात् सहयोगी बनो तो सहजयोगी बन ही जायेंगे। लेकिन सहयोगी वही बन सकते हैं जो सम्पन्न है। सहयोगी बनना अर्थात् महादानी बनना।

स्लोगन:-

बेहद के वैरागी बनो तो आकर्षण के सब संस्कार सहज ही खत्म हो जायेंगे।

सूचना

पुष्पा बहन जो दिल्ली छज्जूपुर सेवाकेन्द्र पर 35 वर्षों से सेवारत थी और लगभग 50 वर्षों से ज्ञान में थी। आपने साकार मम्मा बाबा की पालना ली थी, आयु 90 वर्ष थी। आपने शुक्रवार 30 अक्टूबर 2009 को रात 9 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। वे काफी समय से बीमार थी। 31 अक्टूबर को अलौकिक परिवार ने श्रृद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनका अन्तिम संस्कार किया।

''मीठे बच्चे – तुम एक बाप के डायरेक्शन पर चलते चलो तो बाप तुम्हारा रेस्पॉन्सिबुल है, बाप का डायरेक्शन है चलते-फिरते मुझे याद करो''

प्रश्नः- जो अच्छे गुणवान बच्चे हैं उनकी मुख्य निशानियां क्या होंगी?
उत्तरः- वह कांटों को फूल बनाने की अच्छी सेवा करेंगे। किसी को भी कांटा नहीं लगायेंगे, कभी भी आपस में लड़ेंगे नहीं। किसी को भी दु:ख नहीं देंगे। दु:ख देना भी कांटा लगाना है।

गीतः- यह वक्त जा रहा है.....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों ने नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार इस गीत का अर्थ समझा। नम्बरवार इसलिए कहते हैं क्योंकि कोई तो फर्स्ट ग्रेड में समझते हैं, कोई सेकण्ड ग्रेड में, कोई-कोई थर्ड ग्रेड में। समझ भी हर एक की अपनी-अपनी है। निश्चयबुद्धि भी हर एक की अपनी है। बाप तो समझाते रहते हैं, ऐसा ही हमेशा समझो कि शिवबाबा इन द्वारा डायरेक्शन देते हैं। तुम आधाकल्प आसुरी डायेरक्शन पर चलते आये हो, अब ऐसे निश्चय करो कि हम ईश्वरीय डायरेक्शन पर चलते हैं तो बेड़ा पार हो सकता है। अगर ईश्वरीय डायरेक्शन न समझ मनुष्य का डायरेक्शन समझा तो मूंझ पड़ेंगे। बाप कहते हैं–मेरे डायरेक्शन पर चलने से फिर मैं रेसपॉन्सिबुल हूँ ना। इन द्वारा जो कुछ होता है, उनकी एक्टिविटी का मैं ही रेसपॉन्सिबुल हूँ, उसको हम राइट करेंगे। तुम सिर्फ हमारे डायरेक्शन पर चलो। जो अच्छी रीति याद करेंगे वही डायरेक्शन पर चलेंगे। कदम-कदम ईश्वरीय डायरेक्शन समझ चलेंगे तो कभी घाटा नहीं होगा। निश्चय में ही विजय है। बहुत बच्चे इन बातों को समझते नहीं हैं। थोड़ा ज्ञान आने से देह-अभिमान आ जाता है। योग बहुत ही कम है। ज्ञान तो है हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना, यह तो सहज है। यहाँ भी मनुष्य कितनी साइंस आदि पढ़ते हैं। यह पढ़ाई तो इज़ी है, बाकी मेहनत है योग की।

कोई कहे बाबा हम योग में बहुत मस्त रहते हैं, बाबा मानेगा नहीं। बाबा हर एक की एक्ट को देखते हैं। बाप को याद करने वाला तो मोस्ट लवली होगा। याद नहीं करते इसलिए ही उल्टा-सुल्टा काम होता है। बहुत रात-दिन का फ़र्क है। अभी तुम इस सीढ़ी के चित्र पर भी अच्छी रीति समझा सकते हो। इस समय है कांटों का जंगल। यह बगीचा नहीं है। यह तो क्लीयर समझाना चाहिए कि भारत फूलों का बगीचा था। बगीचे में कभी जंगली जानवर रहते हैं क्या? वहाँ तो देवी-देवता रहते हैं। बाप तो है ही हाइएस्ट अथॉरिटी और फिर यह प्रजापिता ब्रह्मा भी हाइएस्ट अथॉरिटी ठहरे। यह दादा है सबसे बड़ी अथॉरिटी। शिव और प्रजापिता ब्रह्मा। आत्मायें हैं शिव बाबा के बच्चे और फिर साकार में हम भाई-बहन सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। यह है सबका ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर। ऐसे हाइएस्ट अथॉरिटी के लिए हमको मकान चाहिए। ऐसे तुम लिखो फिर देखो बुद्धि में कुछ आता है।

शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा, आत्माओं का बाप और सब मनुष्य मात्र का बाप। यह प्वाइंट बहुत अच्छी है समझाने की। परन्तु बच्चे पूरी रीति समझाते नहीं हैं, भूल जाते हैं, ज्ञान की मगरूरी

चढ़ जाती है। जैसेकि बापदादा पर भी जीत पा लेते हैं। यह दादा कहते हैं, मेरी भल न सुनो। हमेशा समझो शिवबाबा समझाते हैं, उनकी मत पर चलो। डायरेक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह-यह करो, रेसपॉन्सिबुल हम हैं। ईश्वरीय मत पर चलो। यह ईश्वर थोड़ेही है, तुमको ईश्वर से पढ़ना है ना। हमेशा समझो यह डायरेक्शन ईश्वर देते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण भी भारत के ही मनुष्य थे। यह भी सब मनुष्य हैं। परन्तु यह शिवालय के रहने वाले हैं इसलिए सब नमस्ते करते हैं। परन्तु बच्चे पूरा समझाते नहीं हैं, अपना नशा चढ़ जाता है। डिफेक्ट तो बहुतों में है ना। जब पूरा योग हो तब विकर्म विनाश हों। विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है। बाबा देखते हैं, माया एकदम नाक से पकड़कर गटर में गिरा देती है। बाप की याद में तो बड़ी खुशी में प्रफुल्लित रहना चाहिए। सामने एम ऑब्जेक्ट खड़ी है, हम यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं। भूल जाने से खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ, बाहर में हम याद नहीं कर सकते हैं। याद में नहीं रहते हैं इसलिए कभी-कभी बाबा भी प्रोगाम भेज देते हैं परन्तु याद में बैठते थोड़ेही हैं, बुद्धि इधर-उधर भटकती रहती है। बाबा अपना मिसाल बताते हैं–नारायण का कितना पक्का भक्त था, जहाँ-तहाँ साथ में नारायण का चित्र रहता था। फिर भी पूजा के समय बुद्धि इधर-उधर भागती थी। इसमें भी ऐसा होता है। बाप कहते हैं चलते-फिरते बाप को याद करो परन्तु कई कहते हैं - बहन नेष्ठा करावे। नेष्ठा का तो कोई अर्थ ही नहीं है। बाबा हमेशा कहते हैं याद में रहो, कई बच्चे नेष्ठा में बैठे-बैठे ध्यान में चले जाते हैं। न ज्ञान, न याद रहती। या तो फिर झुटके खाने लग पड़ते हैं, बहुतों को आदत पड़ गई है। यह तो अल्पकाल की शान्ति हो गई। गोया बाकी सारा दिन अशान्ति रहती है। चलते-फिरते बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा? आधाकल्प का बोझा है। इसमें ही बड़ी मेहनत है। अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। भल बाबा को बहुत बच्चे लिख भेजते हैं–इतना समय याद में रहा परन्तु याद रहती नहीं है। चार्ट को समझते ही नहीं हैं। बाबा बेहद का बाप है। पतित-पावन है तो खुशी में रहना चाहिए। ऐसे नहीं, हम तो शिवबाबा के हैं ना। ऐसे भी बहुत हैं। समझते हैं हम तो बाबा के हैं। लेकिन याद बिल्कुल करते नहीं। अगर याद करते होते तो फिर पहले नम्बर में जाना चाहिए। किसको समझाने की भी बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। हम तो भारत की महिमा करते हैं। नई दुनिया में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था। अभी है पुरानी दुनिया, आइरन एज। वह सुखधाम, यह दुःखधाम। भारत गोल्डन एज था तो इन देवताओं का राज्य था। कहते हैं हम कैसे समझें कि इनका राज्य था? यह नॉलेज बड़ी वन्डरफुल है। जिसकी तकदीर में जो है, जो जितना पुरूषार्थ करते हैं वह देखने में तो आता है। तुम एक्टिविटी से जानते हो, हैं तो कलियुगी भी मनुष्य, तो सतयुगी भी मनुष्य। फिर उन्हों के आगे माथा जाकर क्यों टेकते हो? इन्हों को स्वर्ग का मालिक कहते हैं ना। कोई मरता है तो कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, यह भी नहीं समझते। इस समय तो नर्कवासी सब हैं। जरूर पुनर्जन्म भी यहाँ ही लेंगे। बाबा हर एक की चलन से देखते रहते हैं। बाबा को कितना साधारण रीति से किस-किस से बात करनी पड़ती है। सम्भालना पड़ता है। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। समझते भी हैं तो बात बड़ी ठीक है। फिर भी क्यों बड़े-बड़े काँटे बन जाते हैं। एक-दो को दुःख देने से काँटे बन जाते हैं। आदत

छोड़ते ही नहीं। अभी भगवान बाप फूलों का बगीचा लगाते हैं। काँटों को फूल बनाते रहते हैं। उनका धन्धा ही यह है। जो खुद ही काँटा होगा तो फूल कैसे बनायेगा? प्रदर्शनी में भी बड़ी खबरदारी से किसको भेजना होता है।

अच्छे गुणवान बच्चे वह जो कांटों को फूल बनाने की अच्छी सेवा करते हैं। किसी को भी कांटा नहीं लगाते हैं अर्थात् किसी को दु:ख नहीं देते हैं। कभी भी आपस में लड़ते नहीं हैं। तुम बच्चे बहुत एक्यूरेट समझाते हो। इसमें किसी की इनसल्ट की तो बात ही नहीं। अभी शिव जयन्ती भी आती है। तुम प्रदर्शनी जास्ती करते रहो। छोटी-छोटी प्रदर्शनी पर भी समझा सकते हो। एक सेकेण्ड में स्वर्गवासी बनो अथवा पतित भ्रष्टाचारी से पावन श्रेष्ठाचारी बनो। एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति प्राप्त करो। जीवनमुक्ति का भी अर्थ समझते नहीं हैं। तुम भी अभी समझते हो। बाप द्वारा सबको मुक्ति जीवनमुक्ति मिलती है। परन्तु ड्रामा को भी जानना है। सब धर्म स्वर्ग में नहीं आयेंगे। वह फिर अपने-अपने सेक्शन में चले जायेंगे। फिर अपने-अपने समय पर आकर स्थापना करेंगे। झाड़ में कितना क्लीयर है। एक सद्गुरू के सिवाए सद्गति दाता और कोई हो नहीं सकता। बाकी भक्ति सिखलाने वाले तो ढेर गुरू हैं। सद्गति के लिए मनुष्य गुरू हो नहीं सकता। परन्तु समझाने का भी अक्ल चाहिए, इसमें बुद्धि से काम लेना होता है। ड्रामा का कैसा वन्डरफुल खेल है। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो इस नशे में रहते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. एक बाप की याद से मोस्ट लवली बनना है। चलते फिरते कर्म करते याद में रहने की प्रैक्टिस करनी है। बाप की याद और खुशी में प्रफुल्लित रहना है।

२. कदम-कदम ईश्वरीय डायरेक्शन पर चल हर कार्य करना है। अपनी मगरूरी (देह-अभिमान का नशा) नहीं दिखाना है। कोई भी उल्टा-सुल्टा काम नहीं करना है। मूंझना नहीं है।

वरदान:- पास विद आनर बनने के लिए पुरूषार्थ की गति तीव्र और ब्रेक पावरफुल रखने वाले यथार्थ योगी भव

वर्तमान समय के प्रमाण पुरूषार्थ की गति तीव्र और ब्रेक पावरफुल चाहिए तब अन्त में पास विद आनर बन सकेंगे क्योंकि उस समय की परिस्थितियां बुद्धि में अनेक संकल्प लाने वाली होंगी, उस समय सब संकल्पों से परे एक संकल्प में स्थित होने का अभ्यास चाहिए। जिस समय विस्तार में बिखरी हुई बुद्धि हो उस समय स्टॉप करने की प्रैक्टिस चाहिए। स्टॉप करना और होना। जितना समय चाहें उतना समय बुद्धि को एक संकल्प में स्थित कर लें--यही है यथार्थ योग।

स्लोगन:-

आप ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट हो इसलिए अलमस्त नहीं हो सकते।

सर्वेन्ट माना सदा सेवा पर उपस्थित।

सूचना

निम्नलिखित सेवाकेंद्रों के मकान परिवर्तित हुए हैं अत: नया पता लिख रहे हैं।

1. **Brahma Kumaris**
199, 2nd Floor, 4th Main Rd.
Ist Stage, 2nd Phase
Manju Nath Nagar
BANGALORE - 560010(Kar)

2. **Brahma Kumaris**
HNo.849, Sector 55
Nr.Gochhi Road
FARIDABAD - 121001(HR)
(Sector 55 के बदली)

3. **Brahma Kumaris**
"Vardani Bhawan"
Narmada Colony
GADARWARA - 487551
Dist :- Narsinghpur(Mp)

4. **Brahma Kumaris**
124, UB.Colony
Dunlop Nr.34B Bus Stand
KOLKATA - 700108(WB)
(Tatipara के बदली)

5. **Brahma Kumaris**
Master Lane, Shastri Rd.
Potta kullam
Mannuthy Road
THRISSUR - 680005(Ker)

6. **Brahma Kumaris**
Kolleshwar Nagar
Nr.Kurmit Bhawan
Kukunur Post
YELBURGA(583236(Kar)

1. Agartala(TPR) का परिवर्तित फोन No. 2322422 है।
2. Kalyan (Mh) Katemanenvali का फोन No. 2363575 है।